भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-17, अंक-4 मंगलार, 26.4.94	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी अप्रैल, 1994	वार्षिक चन्दा-30.00 प्रति अंक : 3.00

ओहो ! आया आत्मीय महोत्सव ....

4 मई.....प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पृथ्वी पर मानवदेह में प्रगट होने का परम पवित्र दिन ! बापा ने साधु की दीक्षा देते हुए नाम ही कैसा दिया? 'हरिप्रसाद' अर्थात् प्रभु का हम सब को दिया अमूल्य प्रसाद.....साक्षात् महाराज को प्रगटाये हुए दिव्य विभूति गुरुहरि योगीजी महाराज ने कृपा करके पू. स्वामिजी की अनमोल भेंट समग्र गुणातीत समाज को दी। और.... खूब हर्ष की बात है कि इसी वर्ष उनका हीरक महोत्सव-आत्मीय महोत्सव 27th दिसम्बर' 94 से 31st दिसम्बर' 94 तक सोखड़ा-हरिधाम में खूब धूमधाम से मनाया जाएगा। वे 61वे वर्ष में पदार्पण करेंगे। सभी को अपनी उनके प्रति भक्ति अदा करने का अवसर मिलेगा.....

आज प.पू. स्वामिजी का विशाल कार्य देखकर हरेक को स्पष्ट ख्याल आता है कि गुरुहरि योगीजी महाराज ने भविष्य के लिए कैसा पात्र चुना था। पिछले कितने सालों से निरन्तर प.पू. स्वामिजी कल्पना से परे का परिश्रम लेकर पामर, विषयी, मुक्त या मुमुक्षु, नास्तिक या आस्तिक, बालक, युवकों या बुजुर्गों-संबंध में आये सभी इसी जीवन में प्रभु के पुत्र बनकर जीवन की सच्ची धन्यता अनुभव कर सकें.....अमृतमय पवित्र, निर्व्यसनी जीवन जीये, आदर्श सेवक बनें-इस विशाल और मंगलमय योजना को लेकर अविरत विचरण कर रहे है.....उन्हें किसी से क्या स्वार्थ ? अक्षरधाम के इन पुरुषों को हम दे भी क्या सकते हैं? पर फिर भी वे हम पर अकारण करुणा बरसा रहे है। यह हमारे परम सौभाग्य की बात है।

लेकिन....एक प्रश्न सहज उठता है वह क्या -कि भगवान और संत का संबंध होने के बाद भी हम दुःखी क्यों रहते हैं? ग्लानि, चिन्ता, भय, शोक में क्यों डूबे रहते हैं? उलझन क्यों होती है? कारण यह है कि अहंता और ममता के जाल में हम हमेशा फंसे रहते हैं। भगवान और संत हमारा जीवन प्रभुमय बनाना चाहते हैं.....और हमें प्रभुमय होना नहीं-यह ही आपत्ति है। परन्तु, मेरा जो कुछ भी है, सर्वस्व संत का है। यूं मानकर संत की प्रसन्नार्थ संत के पास अगर हम 'सरल' होकर रहेंगे तो हम जरूर सुखी होंगे ही.....'सरलता' संत को प्रसन्न रखने का सर्वोपरि साधन है। सच्चे सरल सेवक पर संत की अंतर दृष्टि रहेगी ही।

अर्जुन श्री कृष्ण के पास सरल रहे तो श्री कृष्ण परमात्मा की कृपा से उनके अंदर और बाहरी दोनों कुरुक्षेत्र का अन्त आ गया 'मुन्नी' कबीरजी के पास सरल रही तो कबीरजी के ज्ञान की पात्र बन गई।

पू. गोरधनभाई, पू. पर्वतभाई महाराज के सम्मुख सरल रहे तो महाराज की माला के मनके में आ गए.....महाराज उनका भजन करते थे।

सभी गुणातीत स्वरूपों को 'सरलता' का गुण सबसे अधिक पसंद है। प.पू. काकाजी को तो सब 'सरलता' का राजा कहते थे। यदि स्वरूपों के पास सरलता का एक गुण पकड़े रखेंगे तो बाकी सुहृदभाव, आत्मीयता आदि सभी गुण उसके पीछे अपने आप आयेंगे। हर संजोगों में सरल सेवक की जीत निश्चित है। हरिधाम सोखड़ा में प.पू. स्वामिजी की दीक्षा रजत जयंती निमित्त संतमंडल ने खूब परिश्रम करके

'साधक सुधा' में प.पू. स्वामिजी के निचोड़रूप 'ब्रह्मसूत्र' साधना के मूलभूत सिद्धान्तों के रूप में लिखे हैं.....उनसे स्पष्ट पता चलता है कि प.पू. स्वामिजी की अब सब से क्या अपेक्षा है, उनका क्या अभिप्राय है, वे हमसे क्या कराना चाहते हैं और इसी के अन्तर्गत उन्होंने सरल सेवक के लक्षण भी बताए हैं–वे हमारे जीवन का आधार बनें इस हेतु आईए उन सूत्रों पर मन-चिंतन करें.....

सरल सेवक

★ सरल सेवक के लक्षण :

– हाँ से हाँ और ना से ना किया करे।
– 'मैं तेरी बंसी'.....ऐसी सुरूचि अखंड रहे।
– No शब्द कभी भी नहीं।
– ''जैसा-वैसा, कैसा भी, कही भी, यहाँ-वहाँ, जब-तब''-यूं सहज बुला ले।
– जिसके ऊपर संत और भगवदी निरंतर अधिकार कर सके, संत को उसका सरीखा पक्का विश्वास हो।
– कोरे कागज जैसा जिसका हृदय हो।
– मेरा मुझमें कुछ नहीं सिर्फ तू...ऐसी जिसकी सहज भावना हो।
– सरल सेवक का जीवन गुरूमुखी होता है, मनसुखी जीवन कभी भी नहीं-किंचित भी नहीं।
– सरल सेवक का आंतरिक व बाहरी जीवन की एकता होती है, जरा भी दिखावा नहीं, ढोंग नहीं, प्रदर्शन नहीं होता।
– सरल सेवक को संत, भगवदी और मुक्तों की प्रत्येक क्रिया, दोष, स्वभाव, प्रकृति.....सब कुछ सहज जँचता है।
– सरल सेवक कभी किसी की उपेक्षा नहीं करता, कभी किसी के पास अपेक्षा नहीं रखता।
– सत्पुरुष को कभी सरल सेवक का ध्यान नहीं रखना पड़ता।

★ सरल सेवक :

– बड़े पुरुष के अभिप्राय के मुताबिक की सेवा-भक्ति निरंतर करता ही रहता है।
– इशारे में समझता है, समझाना नहीं पड़ता।
– सत्पुरुष को क्या जँचता है और नहीं उसका उसे ख्याल होता ही है.....उसे ख्याल देना नहीं पड़ता।
– 'सर्वदेशीय बनो,'.....'आत्मीय बनो' योगी शताब्दी आ रही है, अब दौड़ो,-यूं उसे कहना ही नहीं पड़ता और एक ही बार के सूचन से वह जागृत हो ही जाता है.....लग ही पड़ता है।
– बड़े पुरुष की सत्ता और मूर्ति का उसे सहज स्वीकार होता है।
– कैसी भी आंतरिक बाहरी परिस्थिति हो, लेकिन उसका आनंद कभी जाता ही नहीं।
– किसी का भी गुणगान हो, चाहे बराबरी के साथी मुक्तों के हों या अपने से छोटो का हो, परन्तु उसे वह जँचता ही हैं।
– कभी किसी को कुछ ख्याल देने नहीं लग पड़ता, स्वयं कसनी की कड़ी भक्ति करने लगा ही रहता है।

★ सरल सेवक मन-बुद्धि के जाल में कभी फंसता नहीं.....बस 'तू ही कर्ता-हर्ता, तू ही सर्वोपरि'....ऐसे संबंध में अखंड रहता है.....फिर उसे अभाव-अवगुण, भावफेर हो ही कैसे सकता है?

★ सरल सेवक दृढ़ विश्वास रखने वाला होता है। चाहे खुद में लाखो टन दोष-स्वभाव भी हो, पर वह उनका भी भार नहीं रखता। बस, वह एक-दो विचार में रहता है.....

– प्रभु तू सही है।
– प्रभु तू दिव्य ही है।
– प्रभु तू सर्वोपरि ही है।

फिर मुझे मेरी चिंता क्यों करनी? ऐसा मानकर लगा ही रहता है। दोष टले या नहीं भी टले, स्वभाव जाए या नहीं जाए, परन्तु उसकी श्रद्धा और विश्वास में कभी डगमगाहट आती ही नहीं।

★ सरल सेवक की नजर केवल बड़े पुरुष की ओर ही होती है, जिससे दूसरों के दोष-स्वभाव का उसे स्वप्न में भी ख्याल नहीं होता, रहता ही नहीं।

★ वह सब का होता है,
सबके ढंग से वर्तता है,
सब को राजी करने में लगा रहता है,
सभी में खो जाता है,
पर तब भी वह एक का ही होता है।

★ पू. साहेब 'सरलता' का मूर्तिमान स्वरूप है..... प.पू. काकाजी को भी पू. साहेब की सरलता खूब पसंद। योगी बापा को पू. साहेब का सम्पूर्ण विश्वास। पू साहेब का जीवन हमारी सरल साधना के लिए आदर्शरूप ही है।

★ सरल सेवक यानि अखंड संबंध वाला जीवन- पू. साहेब गुरुहरि योगीजी महाराज के पास ऐसा ही वर्ते.....

चूँकि लोक, भोग, वासना और स्वभाव के बंधन से परे होना वह जीव को जँचता नहीं, तो दूसरी ओर भगवान और संत-सत्संगी के अलावा और कहीं हमारी प्रीति रहे-वह संत को जँचता नहीं। बस यही एक संग्राम चल रहा है-परन्तु यदि 'सरल सेवक' बनोगे तो जीत निश्चित है। तो अब जब

प.पू.स्वामिजी की जयंती का अवसर है और उनका षष्ठीपूर्ति हीरक महोत्सव का वर्ष है-तो तीव्र भजन, प्रार्थना करके गुणातीत स्वरूपों को जो पसंद है वैसा जीने का संकल्प करें और प.पू. स्वामिजी के हीरक महोत्सव-आत्मीय महोत्सव तक तो इस संकल्प को अपने जीवन में खरा उतार सकें ऐसी प्रार्थना.....

☆☆☆

गतांक से चालू:

अमृतपर्व में 3 फरवरी के मंगलकारी दिन- मार्मिक भावात्मक उद्‌गारों.....

आज के दिन मुझे सबसे ज्यादा खुशी वो है कि 90 साल की उम्र होने के बावजूद पू. सोनाबा इस function में आ गये हैं। यह बात खूब मायने रखती है.....I can't express in words.....so let it be in my heart; otherwise I am afraid, it may come out or trickle through eyes.

ऐसी बड़ी सभा होवे तो काकाजी एक sentence बोलेत थे कि यह सब अकेले हाथ से नहीं हुआ है। धन्यवाद है मेरे साथीदारों को। मुझे कई बार ऐसा होता था कि ये formality क्यों करते होंगे? लेकिन आज में जब यहां खड़ा हुआ हूं, तो मुझे वो sentence पूरा गूंजता रहता है कि आज हम भी यहां जो ये function कर रहे हैं, मंदिर बना हुआ है वो अकेले हाथ नहीं हुआ है। धन्यवाद है मेरे गुरुभाईयों को, गुरुओं को जिन्होंने मुझे हमेशा बल दिया, प्रेरणा दी, सहारा दिया, साथ दिया, सहयोग दिया; जिसके फलस्वरूप आज हम बैठे हुए हैं। आज तो यहां शान दिखाई पड़ती हैं, रौनक दिखाई पड़ती है वो कोई अकेले का काम नहीं है। सबसे पहली बात तो जो मूर्तियाँ बनी, मुझे कई कहते हैं कि आप कितनी बार जयपुर गए, खूब परिश्रम किया। लेकिन एक सच-सच बात यह है कि बेशक मैं मूर्तियों के लिए अठारह वार जयपुर गया, लेकिन मल्कानी ने मुझे अगर सामने से ऐसा नहीं कहा होता कि गुरुजी, जब जयपुर जाओ निशान गाड़ी लेते जाना ताकि थकान नहीं लगे। तो मैं दिल की सच्चाई से कहता हूँ कि मैं एक दो बार से ज्यादा नहीं जाता अगर ambessdor में जाना पड़ता तो? मेरा bodily function ही ऐसा है कि मुझे थकान लग जाए और मैं आलस खा जाऊँ लेकिन ये इनकी गाड़ी ऐसी थी। और वह भी सामने से तो मैं माँग नहीं सकता, उन्होंने मुझे ऐसा कहा कि गुरुजी तुम जब भी जयपुर जाओ निशान लेकर जाना। ऐसी छोटी-छोटी चीजों ने ये सारा सर्जन किया हुआ है।

आपको दो बार तो निमन्त्रण मिल चुका था। पिछली feb. में, फिर अप्रैल में और अब ये तीसरी बार' 94Feb. में। लेकिन यह भी सच्चाई है कि अगर नवीनभाई एक महीने से जयपुर नहीं बैठे होते, तो इस बार भी हमें आपको कागज लिखना पड़ता कि मूर्तियाँ तैयार नहीं हुई हैं, सो function अब अप्रैल में करेंगे, मार्च में करेंगे, अगले साल करेंगे। और..... आप तब यही कह देते की अभी आप बैठो, हम मूर्तियाँ बनाकर भेज देंगे। परन्तु ये नवीनभाई ने न घर देखा न income देखी, न कुछ देखा.....

काकाजी? हर एक ने note करा होगा कि काकाजी के जीवन में on top priority प्रभु थे। कई बार उंगली से बताते थे कि तुम्हारा पहला कौन? दूसरा कौन? तीसरा कौन? चौथा? पाँचवा कौन? फिर कहते-पंजा पलटा दो, priority पर प्रभु को देखो। यह बाते हम सुनते भी थे, हमें ऐसी उत्कंठा भी होती है, ख्वाईश भी होती है कि हमारे जीवन में सच में अब प्रभु को पहले रखने है लेकिन कहीं अपने मन के अधीन ऐसे होते है, वृत्ति के अधीन ऐसे होते हैं, स्वभाव के अधीन ऐसे होते हैं, व्यवहार के अधीन होते हैं, संसार प्रधान ऐसा है सत्संग, हम फिसल जाते हैं और वहां फिर ठेस लगती है, दर्द पहुँचता है.....

सभी छोटी-बड़ी क्रियाओं हम प्रभु को याद करके करे। इतनी काकाजी की हमेशा की चाहना थी। आज काकाजी का अमृतपर्व है। यहाँ एक मूर्ति हमने निकाली है line sketch वाली। उसमें लिखा है कि बापा की हाजिरी मानकर तुम जीते हो? पल-पल की हमारी क्रिया-वो हाजिर है, उसकी consent लेकर हम करते रहे ऐसा बुद्धियोग काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी हमें दें इतनी अमृतपर्व पर प्रार्थना।

–पू. गुरुजी

☆☆☆

यह सामान्य सभा नहीं है। यह अक्षरधाम की सभा है हमें यह जरूर माना है कि हमें इधर जो मौका मिला है, जो लाभ मिला है वो अपूर्व है.....

उर्मिला की तरह आज हमें भी जरूर सोचना है कि यह गुणातीत समाज के अंदर जो हमारा स्वीकार हुआ है वो सबसे बड़ी भाग्य की बात है। चाहे हम कैसे भी हो, अगर ये गुणातीत स्वरूप ने जो हमारा स्वीकार किया है वो 'न भूतो न भविष्यति' है....वो काकाजी की देन..... वो काकाजी के आशीर्वाद से, काकाजी की कृपा से आप सब के अन्दर वो काकाजी के दर्शन हो रहे हैं। आप सब के अन्दर वो ही काकाजी के भाव दिखाई देते हैं.....

बड़ा मंदिर की पूजा हो गई, प्रतिष्ठा हो गई। काकाजी होते तो यही बोलते कि यह सब अच्छा हुआ है, मगर आप ब्रह्मरूप हुए? वो सबसे बड़ी चीज है.....आज के पवित्र दिन पर जो गुरूजी ने प्रार्थना की है। आप जरूर गुरूजी के पास 5-5 के ग्रुप में आना और गुरूजी के साथ बड़ा आनंद करके दिल्ली से जाना।

–पू. दिनकरभाई (शिकागो)

☆☆☆

जब सांकरदा में मंदिर बना था। दिल्ली में भी यह जगह नहीं मिली थी तब मेरा परिचय दादुकाका से हुआ था। दादुकाका से कई बार काफी चर्चाएं हुई, बहस हुई। उनका एक सपना था कि किसी भी धर्म में मानते हो, किसी भी प्रभु की भावना से मानते हो, उनका अनुबंध जमाने से रहना चाहिए। जब सांकरदा में मंदिर बनाने वाले थे तब सोचते थे कि कैसे सबसे अच्छा बने। उन्होंने मुझे बहुत गहराई से समझाया कैसे बहनों को इस सम्प्रदाय में इतना महत्व का स्थान देने के लिए उन्हें क्या-क्या करना पड़ा। कैसे-कैसे संकट का सामना करना पड़ा? फिर हम कई बार मिलते थे, काफी बातें होती थी। आलविन डाफ्लर की पुस्तक Third weave निकला था, तो मैंने काकाजी को बताया कि एक नया युग जो बन रहा है और ये सभी के बाद जो बनेगा उसमें उसका चित्रण है। उन्होंने कहा कि मुझे यह पुस्तक चाहिए।

उन्होंने कहा कि मुझे ये जो स्वामिनारायण का सम्प्रदाय है उसको multi diamentional बनाना है। आपके जीवन को multi diamentional बनाना है। समाज को multi diamentional बनाना आसान है। राज को multi diamentional बनाना आसान है लेकिन कई सालों से जो सम्प्रदाय चला आता है उसको multi diamentional बनाने के लिए जब कोई बात करता है तब वो हिमालय से भी बड़ी है। आपको समझना चाहिए multi diamentional का मतलब क्या है? हर प्रकार की विश्व की सुन्दरता को उसमें लाना है तभी multi diamentional बन सकता है। उनकी बात करने की शैली अलग थी। कोई धार्मिक प्रवचन करते ऐसी उनकी style नहीं थी। उनकी style एक अलग style थी जिसमें बुद्धि का बड़ा प्रभाव रहता था। वो बुद्धि को छोड़ना नहीं चाहते थे। वो धर्म को अंधश्रद्धा वाली बात नहीं बनाना चाहते थे.....मैं काफी देशों में घूमा हूँ मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि हिन्दुस्तानी की हैसीयत से मैं कहीं किसी देश के कोई आदमी से कम हूँ।

काकाजी का इरादा था कि व्यक्ति अपनी indentity खो रहा है। उसको वो identity वापिस देनी है। उस अर्थ में उन्होंने मुझे सारी धर्म की बातें समझाई थी। वे बोले कि मुझे इसको multi diamentional बनाना है। किसी को छोड़ना नहीं है। सब को अंदर लाना है। लेकिन उनको एक नया रूप देना है। विश्व में आज मनुष्य जो अपनी identity loose कर रहा है, उसका कोई चेहरा नहीं, उसको उनका चेहरा वापिस देना है। इसलिए Bombay में भी गया था और आज भी यहां आया इसीलिए आपको कहने के लिए कि वो काम हम करें। चाहे किसी रीत से करें। हर आदमी की रीत तो अलग-अलग हो सकती है।

-पू. सनत महेता साहेब
(भूतपूर्व वित्त मंत्री-गुजरात सरकार)

☆☆☆

प.पू. काकाजी को 3rd feb.1952 में योगीजी महाराज ने जो साक्षात्कार कराया उसेक बाद हमारा यह गुणातीत समाज बनता रहा। काकाजी ने कितनी बड़ी कठिनाई से यह सारा समाज स्थापित किया और पू. पप्पाजी, पू. स्वामिजी सबका साथ लेकर हम को एक बड़ी भेंट दी इधर ये दिल्ली वासियों के लिए प.पू. गुरुजी की। उनकी हरेक क्रिया अपने जीवन में गुरु को प्रसन्न करने के लिए करी और कितनी समझदारी से उनके साथ रहे जब काकाजी भी प्रसन्न हो गए।

काकाजी का बहुत बड़ा उमंग था जो सनतभाई ने बताया। एक नया समाज जो सम्प्रदायिकता में से निकलने। सच्ची धार्मिकता प्रकट करने के लिए काकाजी कई बार बोलते थे-भद्रंभद्रा निकालनी है धर्म में से। वो निकालने के लिए काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी बहुत परिश्रम ले रहे हैं।

सुबह में बहुत-बड़ी अच्छी तरह से पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, गुरूजी, कोठारीस्वामी, प्रेमस्वामी, सब ने मूर्ति प्रतिष्ठा की। मंदिर की जो मूर्तियों उनमें प्राण लगाया तो अब हमारे लिए एक जीवंत मूर्ति है। उनका दर्शन करेंगे, गुरूजी का माहात्म्य बढ़ेगा, गुरूजी का दर्शन करेगा-मूर्ति में हम को श्रद्धा, विश्वास बढ़ता जाएगा। महाराज धाम, धामी, मुक्त सहित यहाँ विराजमान हो गए है, हमारे हृदय में भी है। हम उनका पूरा आनंद ले सकें ऐसा हमारा

सब का जीवन बना रहे ऐसा पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी आशीर्वाद दे ऐसे शुभ मंगल अवसर की कामना है।

–पू. साहेब (विद्यानगर)

☆ ☆ ☆

काकाजी जैसी आत्माएँ होती है, शरीर चले जाते हैं। आत्मा कभी नहीं जाती है। आत्मा जिससे प्यार करती है, उसको कभी छोड़ती नहीं है। हम छोड़ दे उनको, वो हमको नहीं छोड़ते है। हम थोड़ा प्यार करते हैं वो ज्यादा करते हैं.....आज काकाजी की जो खुशबू है, एक सुगंध है वो कहाँ-कहाँ फैल गई, कहाँ-कहाँ चली गई !

–माननीय श्री एच.के.एल.भगत साहेब

☆ ☆ ☆

आज प.पू. काकाजी के अमृतपर्व में सम्मिलित होकर मुझे प्रसन्नता ही नहीं एक बड़ा शुभ आशीर्वाद मिला है। जो कुछ मैंने पू. काकाजी द्वारा स्थापित इस समाज के बारे में देखा और सुना-जिस तरह धर्म का निष्कर्ष, धर्म का निचोड़ निकालकर समाज के सामने रखा और उसको समाज ने और प.पू. काकाजी के साथियों ने जिस तरह पनपाया, जिस तरह बढ़ाया, जिस तरह सारे संसार में फैलाया उसको देखकर कोई भी चकित हो जाएगा।

–माननीय श्री पी.के.दवे साहेब
(उपराज्यपाल-दिल्ली)

☆ ☆ ☆

उत्तर प्रदेश के छपैया गाँव में भगवान स्वामिनारायण प्रगट हुआ। संकल्प किया-एक परम चेतना, एक परम दिव्यता, परमशक्ति ये पृथ्वी पर मैं अखंड रहूँगा। सच्चे पुरुष का सम्पूर्ण पुरुष का यह एक ही लक्षण है। वो पवित्र है और दूसरो की आँखों को पवित्र बनाता है। भगवान स्वामिनारायण ने पृथ्वी पर आकर ऐसी एक दिव्य जीवंत परम्परा पृथ्वी पर लाकर खड़ी कर दी।

3rd Feb. हम इसलिए मनाते हैं कि नंदाजी के election में गुरुवचन से काकाजी ने अद्‌भुत काम किया। वो साबरकांठा, गुजरात की धरती पर। स्वामिजी राजी हो गया। भगवान को प्रार्थना किया कि काकाजी हिम्मतनगर की धरती पर से आए हैं। वहां पर इडर छोटा town है, वहां एक पर्वत है। वो इडरिया गढ़ जीत कर आया है। तो मेरा एक संकल्प है आठ आवरण का वो गढ़ जीत जाए और.....आत्मा में आप बस जाओ। बस, वो मंगलकारी दिन 3rd Feb. हम मना रहे हैं।

दिल्ली को काकाजी ने अपना माना। वो मानव नहीं, वो पंचभूत में रहने वाली व्यक्ति नहीं थी। मगर योगीजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करके ज्योत से ज्योत ! बापा ने काकाजी के हृदय में स्वामिनारायण को प्रगट कर दिया। सारे इन्द्रियाँ-अंतःकरण पवित्र प्रभु में डूब गया, दिव्य बन गया।

शास्त्रीजी महाराज का संकल्प काकाजी ने झेला। काकाजी सच्चा गुरुभक्त था। गुरुभक्ति उसका प्राण था। गुरुजी को एक निमित्त बनाया जहमत उठाई। बहुत परिश्रम उठाया। पाँच घर थे-एक-एक को मिलने के लिए बहुत प्रयत्न किया है यहां उसने। गरीब बनकर, गरजु होकर, सब का दास बनकर। यह दिल्ली की धरती पर घूमा है। हरिभक्तों ने खूब लाभ लिया है, मगर गरज काकाजी ने रखी थी। तो वो सनातन दिव्य पुरुष वो देहातीत पुरुष। मन, बुद्धि, चित्त, अहम् से पर चिदाकाश की दिव्य अवस्था में रहने वाले पुरुष। भगवान में निरंतर रहने वाले पुरुष। दिल से मानना मेरे जैसे यह ब्रह्मांड में नहीं, अनंत ब्रह्मांड़ों में कोई भाग्यशाली नहीं। ऐसा पुरुष कहाँ मिलेगा? हठ, मान, ईर्ष्या के तांडवों का नृत्य न हो ऐसा पुरुष की प्राप्ति धरती पर हो सकती नहीं है। कृपा हो जाए तब उसकी प्राप्ति होती है।

दिल से मानना मैं बहुत खूब भाग्यशाली हूँ। भगवान स्वामिनारायण अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की शुद्ध उपासना का मैं सेवक। काकाजी ने अपना मानस पुत्र ये धरती पर रखा। तो मैं आपको यह विनती करता हूँ, दिल से अंतर से मानना है कि मैं भाग्यशाली हूँ। गुरुजी जैसे संत के साथ मैत्री लगाकर, प्रीति, मन-बुद्धि से पार निष्ठा रखना। मन-बुद्धि से पार प्रीति रखना। मन-बुद्धि को हटाकर प्रीति रखना। ऐसा एक संबंध दृढ़ करने की इच्छा रखना। प्रभु और गुणातीत स्वरूपों के चरणों में एक ही प्रार्थना, एक संबंध करके अपना जीवन धन्य करें।

–प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी
(हरिधाम-सोखड़ा)

☆ ☆ ☆

बहुत आनंद की बात है-काकाजी का जो सपना था, महाराज का सपना था, शास्त्रीजी महाराज का सपना था वो संकल्प था कि दिल्ली में, भव्य मंदिर बन जाए और गुरुजी ने पूर्ण किया। कर्तव्य-कर्म का fulness गुरुजी ने बतलाया। देश-विदेश में अक्षरपुरुषोत्तम का डंका बजाता है।

संतों, बहनों, युवकों और गृहस्थों चारों पखुँडियाँ अभी गुणातीत समाज में अखंड भगवान के धारक मुक्तों दिखाई देते हैं। तो महाराज, काकाजी, योगीजी महाराज अभी खूब-खूब खुश होंगे। जैसा भगत साहेब ने कहा कि चैतन्य स्वरूप तो जाता नहीं, वह यही रहता है। काकाजी हम सब में अभी प्रगट हो गए। याद करा और काकाजी हमें राह दिखाते होंगे। सही बात तो यह है कि गुरुजी में सांगोपांग रहे। दिनकरभाई में रहे। व्रतधारी युवकों, बहनों, बम्बई में है वे भी सांगोपांग काकाजी को धारकर जीते हैं ! रोम-रोम में गुरुजी काकाजी को धारण कर रहे हैं और काकाजी प्रसन्नता उनके ऊपर हुई। इस तरह काकाजी का आध्यात्मिक वारिसदार गुरुजी

बना है। सहज काकाजी का संकल्प सिद्ध करा। गुरूजी की प्रसन्नता जो प्राप्त करे तो काकाजी प्रसन्न हो जाएं। इसलिए मेरा तो इतना ही कहना है आज कि गुरूजी की प्रसन्नता में खो जाएं-वो राजी कैसे हो वैसा विचार कर वर्तन करके और काकाजी की प्रसन्नता प्राप्त करें। योगीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त करें। महाराज की प्रसन्नता प्राप्त करें। आज के शुभ दिवस प्रार्थना और आशीर्वाद.....

–प.पू. पप्पाजी

☆ ☆ ☆

जय माता दी.....

भगवत्स्वरूप प.पू. साहेब द्वारा सत्संग से जुड़े भारतीय सेना के मुख्यालय उत्तरी कमान्ड चीफ ऑफ स्टाफ लेफ्टिनेन्ट जनरल वालिया साहब, पू. गुरूजी को बहुत दिनों से उद्यमपुर-जम्मू-कश्मीर, अपने घर आने के लिए आग्रह कर रहे थे..... प.भ. वालिया साहब के आग्रह पर व कई भक्तों के मन का मनोरथ जानकर पू. गुरूजी करीब 15 हरिभक्तों के साथ 15 अप्रैल' 94 की रात को निकले और 16 अप्रैल' 94 की सुबह जम्मू पहुँच गए। उस दिन office की जरूरी व urgent meeting होते हुए भी प.भ. वालिया साहब स्वयं स्टेशन पर पू. गुरूजी को receive करने आए थे। जम्मू में army के transit camp के incharge कर्नल डी.जे. ओजला व उनकी family ने संतों के प्रति अच्छा सद्भाव रखा व सेवा कर ली।

पू. गुरूजी के सान्निध्य में जम्मू में तीन मंदिरों के दर्शन करके सब दोपहर 2.00 बजे जम्मू से उद्यमपुर जाने निकले और 4.00 बजे शाम को उद्यमपुर पहुँचे। सच ! वालिया साहब के परिवार की सेवा-भावना देखते ही बनती थी। इतने थके होने के बावजूद इन्दिरा आंटी ने खूब भावना से स्वयं खाना बनाया, जबकि उनके घर में कई तो servents हैं और ऐसा नहीं कि केवल पू. गुरूजी के लिए-बल्कि सभी भक्तों की भी अत्यधिक महिमा से सेवा-संभाल की.....बहनें उन्हें रसोई आदि में मदद कराने गई तो उन्होंने कहा कि नहीं मैं ही बनाकर खिलाऊँगी। यूँ जितने दिन हम सब रहे उतने दिन उन्होंने ही खाना बनाकर भावपूर्ण हृदय से खिलाया। प्रेमविभोर गोपियों की बातें अब तक सुनी थी, पर इन्दिरा आंटी की संतों के प्रति सेवा, दर्शन की भावना, हरिभक्तों के प्रति का स्नेह, उनकी उमंग की 'बस ! मैं सब के लिए क्या कर दूँ? क्या-क्या बनाकर खिला दूँ? यह देखकर हरेक को उनमें से 'गोपीभाव' मानो निखरता दिखाई पड़ा। इन्दिरा आँटी तो ऐसा बोले कि 'गुरूजी ने यहाँ आकर हम पर खूब कृपा करी हैं.....उनके तो कई भक्त होते हैं, उन सब में से वे हमारे घर पर आए वह हमारा कैसा अहोभाग्य कहा जाये न?' दूसरी ओर प.भ. वालिया साहब का सेवकभाव, विनम्रता सभी के दिल को छू गई.....इतने अच्छे ओहदे पर होते तनिक भी उसका आभासमात्र नहीं....और इससे भी अधिक पू. गुरुजी व हरिभक्तों की अधिक से अधिक सेवा में ही अपना समय devote करा।

17 अप्रैल' की सुबह वैष्णोदेवीजी के दर्शन करने जाना था....गुरुहरि योगीजी महाराज की परावाणी में कहें तो– तीर्थो को तीर्थत्व प्रदान करने भगवान धारक ऐसे संत एक उदार कल्याणकारी योजना लेकर जाते हैं कि जाने-अनजाने ऐसे संतों का जो एक बार दर्शन करे वह कल्याण का अधिकारी..... ! भगवान स्वामिनारायण ने धरती पर आकर समग्र मानवजाति को जैसे मुफ्त में मौज दे दी ! करोड़ों वंदन भगवान स्वामिनारायण को.....

सो, 17 अप्रैल की सुबह सब पू. गुरूजी के साथ वैष्णोदेवी के दर्शन करने जाने निकले.....8.00 बजे के करीब कटरा में जलपान करके वैष्णोदेवीजी की यात्रा शुरु करी। प.भ. वालिया साहब ने फौज़ी घोड़ों की व्यवस्था की थी.....इसलिए कुछ घोड़े पर बैठे और कुछ पैदल चलते हुए वैष्णोदेवीजी की यात्रा के लिए निकले। सारे रास्ते में एक-एक घंटे की दूरी पर प.भ. वालिया साहब ने जलपान की इतनी अच्छी व्यवस्था करी थी कि किसी को भी थकान ही नहीं लगी और.....प.भ. वालिया साहब स्वयं तो एक सेवक की भाँति पैदल ही सारे रास्ते चले.....दोपहर 2.00 बजे वैष्णोदेवीजी के भवन के पास एक विश्रामगृह में स्नानकर के माता के दर्शन के लिए भवन में गए। बहुत अच्छी व्यवस्था के कारण अन्दर गुफा में खूब नजदीक से वैष्णों देवीजी का दर्शन हुआ.....पू. गुरूजी ने वहां धून्य की व प.भ.वालिया साहब का पूजन किया। इतने नजदीक से दर्शन की तो किसी की कल्पना भी नहीं थी। दर्शन करके विश्रामगृह में सब ने प्रसाद लिया और फिर भैरोजी के मंदिर गए.....वहां दर्शन करके वापिस कटरा आकर प्रसाद लिया और रात को प.भ. वालिया साहब के घर पहुँच गए।

18 अप्रैल' 94 की सुबह सब ने पू. गुरूजी की पूजा का लाभ लिया....प.भ. वालिया साहब ने पू. गुरूजी के साथ धून्य करी। दोपहर को प्रसाद लेने के बाद प.भ. वालिया साहब उद्यमपुर से करीब डेढ़ घंटे की दूरी पर पटनी टौप नामक पिकनिक स्पोट पर ले गए। पटनी टौप जो एक risky area सो security की व्यवस्था करके वहां गए। वहां military की defence hut में जलपान-नाश्ते की व्यवस्था थी....सब ने खूब आनंद किया। पू. गुरूजी ने खुश होकर वहां के incharge Military officer को स्मृतिरूप अक्षरपुरुषोत्तम की मुद्रा दी। पटनी टौप से वापिस लौटते हुए प.भ. वालिया

साहब के under काम करते Major Sanjay के घर गए....वहां पर धून्य-प्रार्थना करके उन्हें भी स्मृतिरूप मुद्रा दी। फिर पू. गुरूजी Mess में गए जहां हरिभक्तों के रहने की व्यवस्था की थी। वहां भी अच्छी व्यवस्था से खुश होकर पू. गुरूजी ने वहां के inchage को भी स्मतिरूप मुद्रा दी। Mess से प.भ. वालिया साहब के घर आकर पू. गुरूजी ने थोड़ी सत्संग की बातें करी.....

19 अप्रैल' 94 की सुबह पू. गुरुजी ने पूजा करते हुए प.भ. वालिया साहब को प्रसादी का फूल दिया। फिर प.भ. वालिया साहब Office चले गए। उसी दिन 3.00 बजे train से जम्मू से सब को दिल्ली वापिस आना था सो 12.30 वजे office से वापिस आकर प.भ. वालिया साहब पू. गुरूजी के साथ और इंदिरा आंटी बहनों के साथ व सभी हरिभक्त जम्मू स्टेशन आए। स्टेशन पर ही प.भ. वालिया साहब के साथ आए Army वालों को पू. गुरूजी ने एक-एक अक्षरपुरुषोत्तम की pocket diary दी और अंत में प.भ. वालिया साहब के सेवकभाव का दर्शन.....कि उनके सारे juniors खड़े थे और वे इतनी बड़ी rank पर-लेकिन तब भी सभी हरिभक्तों के पैर छूकर उन्हें जय स्वामिनारायण करके विदाई दी। यहाँ पर यह बात साकार देखी कि प्रभु के भक्त माथे का मुकुट मनाएँ.....सच ! प.भ. वालिया साहब की भावना देख हृदय गद्‌गद् हो जाता है।

श्रद्धांजली

गुणातीत समाज के आत्मीय स्वजन प.भ. मंगला साहेब छः महीने caner की बीमारी से खूब पीड़ित रहे..... और.....इसमें साढ़े चार महीने वे अमेरिका में treatment के लिए रहे ! सारे गुणातीत समाज में उनके लिए धून्य-भजन, प्रार्थना चालू ही थी। फिर वे 20 March'94 को भारत वापिस आ गए और 5 April'94 की सुबह 2.00 बजे उन्होंने शरीर छोड़ दिया....महाराज ने उन्हें अपने पास बुला लिया।

मंगला साहब के इस प्रसंग से एक रहस्य भी उभरता है कि भगवान रखे ऐसे संतों की भाषा हम समझ नहीं पाते....November'93 में मंगला साहब retire होने वाले थे। उन्होंने पू. साहेब को पूछा कि साहेब मुझे retirement के बाद क्या करना है? मेरी तो इच्छा है कि मैं ब्रह्मज्योति आकर आपके पास रहकर भजन भक्ति करूँ....पू. साहेब ने इसके जवाब में कागज लिख दिया कि छः महीने रूक जाओ। छः महीने के बाद भगवान रास्ता बता देंगे.....और ठीक छः महीने के बाद ही जैसे पू. साहेब ने अपने पास ब्रह्मज्योति में ही किसी मुक्त में उनकी चेतना रख दी। पू. गुरूजी ने भी बताया है कि मंगला साहब को जन्म-मरण के चक्कर में नहीं फंसना.....माँ के गर्भवास में उन्हें जाना-करना नहीं है। पू. साहेब ने उन्हें अपने पास ही बुला लिया है.....प.पू. पप्पाजी ने तो phone पर कह भी दिया कि **मंगला अक्षरधाम में आ गया**..... ! हम यदि उनकी कही बात विश्वास से मानेंगे तो प्रभु हमें जरूर प्रतीति भी करायेंगे.....

ठीक इसी प्रकार पू. गुरूजी 29th March'94 को मंगला साहब को 'खेड़ा हस्पताल' में मिलने गए जब साथ में मल्कानी अंकल भी थे, तब पू. गुरूजी ने मंगला साहब को गुरुहरि योगीजी महाराज के समय का एक प्रसंग बताया....कि सारंगपुर में साधु को बीमारी से खूब पीड़ा हो रही थी.....तो योगीजी महाराज ने उसे कहा कि सात दिन और झेल लो.... तुम्हारे सात जन्म काटने हैं। पू. गुरूजी का यह प्रसंग उस समय सुनाना ही कुछ अपने आप में रहस्य लिए हुए होगा। मंगला साहब इतनी बीमारी होते हुए भी खूब प्रसन्न-चित्त से यह बात सुन रहे थे....मंगला साहब का परिवार भी शायद यह प्रसंग सुन रहा था। 29th March से 5th April.....यानि पूरे सात दिन बाद 5th की सुबह मंगला साहब ने शरीर छोड़ दिया ! पू. गुरूजी में से जैसे महाराज ही स्पष्ट बोल गए....सच हैं ऐसे स्वरूपों की भाषा समझना खूब कठिन है। इनके इशारे हम समझ नहीं पाते।

मंगला साहब ने अपने हंसमुख, खूब मिलनसार व खुलेपन के nature के कारण थोड़े ही समय में गुणातीत स्वरूपों व सभी मुक्तों के दिल में अनोखा स्थान कर लिया....आत्मबुद्धि व प्रीति से जुड़ गए। पू. साहेब के प्रति अचानक लगाव अजोड़ समर्पण और.....इसलिए पू. साहेब मंगला साहब की बीमारी के समय धुलेन्डी के दिन जबकि उस दिन उनका प्रागट्य दिन ब्रह्मज्योति में खूब हर्ष-उल्लास से मनाया जाता है, उसी दिन वे मंगला साहब को दर्शन देने दिल्ली आए और फिर उनके शरीर छोड़ने के बाद भी 8 April' 94 को श्रद्धांजलि अर्पित करने आए। यही बताता है कि मंगला साहब का कैसा संबंध होगा? पू. गुरूजी के साथ भी मंगला साहब का एक निष्कपट व सखाभाव का संबंध था.....

पिछले चार-पाँच साल से अत्यधिक भजन करके मंगला साहब ने अपना पूरा जीवन का ढाँचा ही बदल दिया था.....उनकी चेतना जैसे स्वामिनारायण-स्वामिनारायण का रटन ही रहती थी....खूब गहराई से वे totally सत्संग में खो गए थे.....अभी cancer की बीमारी पता चलने के दो दिन बाद ही जब प.पू. पप्पाजी व पू. गुरूजी मंगला साहब के घर गए तो मंगला साहब ने भेंट के लिफाफे पर जो प्रार्थना लिखी

थी उसे पढ़कर पू. गुरूजी व हम सभी की आँखों में आँसू आ गए....मंगला साहब ने लिखा कि–**'हे गुणातीत स्वरूपों ! आप हमारे जीवन में आए हम धन्य हो गये.....अंतसमय पर दर्शन देने पधारने की कृपा करना,** । यह sentence पढ़कर गुरूजी बोले भी थे कि मंगला साहब ने सच्चा सत्संग करा, तभी ऐसे संजोगों में भी ऐसे भाव उनके दिल से निकल सकते हैं। मैं मंगला को एक आदर्श भक्त मानता हूँ। और.....यह भी पक्का है कि प्रभु ने मंगला साहब की चेतना की और अधिक प्रगति के लिए केवल स्थूल देह का एक चोला ही बदला है.....

मंगला साहब की कमी तो सभी को महसूस होगी ही। पर उनके लिए प्रभु ने जो जरूरी समझा होगा वह किया है....और अब जब हम सभी जानते हैं कि मंगला साहब को 'स्वामिनारायण' सत्संग खूब प्रिय था, तो परिवार में वो जो हरा-भरा सत्संग रख कर गए हैं.....इतना अच्छा जोग दे गये हैं उसे परिवार में जितना पकड़ रखेंगे उतनी मंगला साहब की आत्मा को भी प्रसन्नता व परिवार वालों के जीवन में सुख, शांति, आनंद रहेगा। सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में हमारी प्रार्थना है कि प्रभु उनके परिवार को खूब बल दें और हर प्रकार से सुखी रखें।

☆ ☆ ☆

पू. नवलबा.....

☆ गुणातीत समाज के आत्मीय स्वजन व हमारे 'पुराने जोगी' पू. नवलबा पावागढ़ी से हमारा करीब सारा समाज परिचित है.....भगवान स्वामिनारायण की परम्परा के ब्रह्मस्वरूप कृष्णजी अदा से जुड़ा इनका परिवार है.....अर्थात् पूर्व का ही संस्कार अत्यधिक बलिष्ठ.....

15 अप्रैल' 94 की सुबह पू. नवलबा ने हम सब के बीच से स्थूल विदाई ले ली। 88 साल की आयु होते हुए भी अत्यंत प्रवृत्तिशील। केवल एक सप्ताह बीमार रहे और निरंतर भजन व स्मृति के माहौल में ही अक्षरवासी हुए.....

पू. नवलबा का जीवन हम सभी के लिए आदर्शरूप है। पू. नवलबा के पास जब भी कोई जाकर बैठता.....बस उनके मुख से हमेशा महिमाभरी, बल भरी बातें ही सुनने को मिलती कि 'ओहो हम कितने भाग्यशाली कि ऐसे स्वरूपों की गोद में हमें रहना मिला..... !' संसार में रहते हुए भी वे संसार से अलिप्त थीं। पू. नवलबा स्वयं अखंड प्रभु की स्मृति में रहकर प्रभु की दृढ़ निष्ठा रखकर जीये। और कईयों को प्रभु के रास्ते की ओर अग्रसर किया।

प्रथम गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति अत्यधिक भक्तिभाव और फिर प.पू. पप्पाजी में महाराज के भाव से ही समर्पित होकर जुड़ गए थे। सारा परिवार व सारा जीवन ही मानो 'कृष्णार्पण'.....उनकी दो पोतियाँ पू. हंसाबहन व पू. चन्द्रिका बहन 'गुणातीत ज्योत' विद्यानगर में भगवान भजने के रास्ते पर अग्रसर हैं.....

1969 में प.पू. गुरूजी जब सर्वप्रथम दिल्ली आए तब दिल्ली में स्वामिनारायण धर्म से परिचित केवल एक पू. नवलबा का family था.....पू. गुरूजी इसी family के आधार पर ही दिल्ली आते.....उस कठिनाई के समय इस परिवार ने हर प्रकार से संतों की सेवा उठा ली और संतों को अत्यधिक मददरूप हुए.....पू. नवलबा कहीं नहीं गये.....वे तो यहाँ धरतीपर भी अक्षरधाम में ही थे और अब भी गुणातीत स्वरूपों के पास जाकर ही बैठें हैं.....समग्र गुणातीत समाज की ओर से पू. नवलबा के पवित्र चरणार्विंद में भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

सम्पादक-पू. भाईस्वामी

☆ ☆ ☆

व्रतोत्सवसूची

1. दि. 4.5.94	बुधवार	गुरुहरि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयंती
2. दि. 6.5.94	शुक्रवार	एकादशी, व्रत
3. दि. 14.5.94	शनिवार	ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज का अंतर्धान दिन
4. दि.	21.5.94	शनिवार एकादशी, व्रत
5. दि. 25.5.94	बुधवार	बुद्ध जयंती, बुद्ध पूर्णिमा

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY
'Anirdesh', Ashok Vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane
Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : R.P. Printers, Shahdara, Delhi-110032 Phone : 7220332, 7138708